पद १०६

(राग: परज - ताल: त्रिताल)

दृष्टी न्याहाळुनी तुम्हि पाहा त्या हरिला ।।ध्रु.।। दीन द्याळ असे नाम जयाचें।तो भीमातटिं उभा। अंबऋषीचें कारण जेणें। अवतार घेतले दहा।।१।। कीर्ति वर्णितां शेषिह शिणले। न वर्णवे ब्रह्मादिकां। भारत भागवतादि वर्णितां। न कळेचि लीला अहा।।२।। माणिक म्हणतसे एक्या भावें। पंढरपुरासी जा। आणिक कांहीं न लागे त्याला। तुळसी अबीर प्रेमें वाहा।।३।।